चोलराज राजेन्द्र प्रथम के राज्यारोहण की सहस्राब्दी

भारत के इतिहास प्रसिद्ध चोलवंश के सुविख्यात पराक्रमी राजा राजेन्द्र (प्रथम) के राज्यारोहण की सहस्राब्दी हम सब के लिए गौरव, प्रेरणा तथा उनकी उपलब्धियों को स्मरण करने का सुअवसर है। सन् 1014 में अभिषेकित राजेन्द्र प्रथम का राज्य उत्तर में गंगातट से लेकर दक्षिण में न केवल सम्पूर्ण दक्षिण भारत अपितु समुद्र पार श्रीलंका, लक्षद्वीप, मालदीव, म्याँमार, इण्डोनेशिया, मलेशिया, लाओस, वियतनाम व कम्बोडिया तक फैला हुआ था। उनकी सुव्यवस्थित शासन प्रणाली तथा सुसंगठित सैन्यबल के कारण उस काल में उनके सम्पूर्ण क्षेत्र में व्यापार, कला, संस्कृति, साहित्य तथा स्थापत्य का प्रचुर विकास हुआ।

साहित्य व ज्ञान के विकास के लिए उनके काल में संस्कृत व तमिल दोनों भाषाओं में श्रेष्ठ ग्रन्थों की रचना हुई। उनके शासन में भारत, श्रीलंका व दक्षिण पूर्व एशिया में स्थापित विशाल मन्दिरों व स्तूपों आदि से बलवती हुई प्राचीन सांस्कृतिक विरासत की पुण्य सलिला आज भी सजीव है। इस सबकी पुष्टि नीदरलैण्ड के लीडन विश्वविद्यालय में रखे संस्कृत व तमिल भाषा में विष्णु स्तुति से प्रारम्भ होने वाली चोलराज राजेन्द्र प्रथम की मुद्रायुक्त राज्याज्ञा के तत्कालीन 21 ताम्रपत्रों के समुच्चय से होती है।

उत्तर–पश्चिम भारत में गजनवी के आक्रमणों एवं अरब व यूरोपीय टकराव के सामरिक उथल–पुथल के दौर में भी उन्होंने एक ऐसी स्थिर शासन व्यवस्था दी थी कि सम्पूर्ण समुद्री मार्ग पर सुरक्षित आवागमन तथा सुदूर पूर्व देशों तक भारतीय, विशेषकर तमिल व्यापारी व व्यापारी संघ निर्बाध व्यापार कर सकते थे। व्यापार को प्रोत्साहन देने हेतु उन्होंने चीन में भी एक दूतावास स्थापित किया।

उन्होंने वेदों व विविध विषयों के अध्ययन के लिए ''एण्णयिरम' नामक स्थान पर विश्वविद्यालय की स्थापना की। राजनैतिक स्थिरता एवं ज्ञान के विकास के साथ–साथ उन्होंने सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकता पर बल देते हुए अपने सेनापति आर्यन राजराजन को भेजकर पवित्र गंगा जल मँगवाया और उसका एक विशाल उत्सव में स्वागत किया तथा कावेरी का जल मिलाकर एक विशाल झील का निर्माण करवाया, जिसके फलस्वरूप वे ''गंगई कोंडा चोलन'' (यानि चोला जो गंगा को लाया) कहलाये।

ऐसे गौरवशाली कालखण्ड का स्मरण आज भी राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के कार्य में सभी के लिए प्रेरणादायी रहेगा। सभी स्वयंसेवकों सहित भारतवासियों को यह आवाह्न है कि श्री चोलराज राजेन्द्र द्वारा इतने विशाल क्षेत्र में एक स्थिर सुशासन व्यवस्था प्रदान कर चतुर्दिक प्रगति की इस उपलब्धि का वे भारत व विश्व में स्मरण करायें तथा इस सन्दर्भ में होने वाले सभी कार्यक्रमों में अपना सहयोग व सहभाग सुनिश्चित करें।

सुरेश जोशी
सरकार्यवाह
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ